Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

"गुरूजी तथा अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन"

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

''गुरूजी तथा अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन''

Mrs. Navneet Singh[1] Mis. Durga Ratoriya[2]

[1]Lecturer, Devi Rukmani Shikshan Shansthan, Khargon (MP)

[2]Lecturer, Devi Rukmani Shikshan Shansthan, Khargon (MP)

Abstract – *शिक्षा मानव विकास की आधारशिला हैं। कोई भी राष्ट्र अपने लक्ष्यों को तब तक प्राप्त नही कर सकता जब तक की वहॉ की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली उच्च कोटी की न हो। राष्ट्र निर्माण करने वाले व्यक्तियों के गुण, चरित्र तथा कार्य क्षमता उनके द्वारा प्राप्त की जाने वाली शिक्षा पर निर्भर हैं। अतः राष्ट्र निर्माण हेतु किसी सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली में शिक्षक अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। शिक्षा के क्षेत्र में इस कटु सत्य से इन्कार नही किया जा सकता है कि शैक्षणिक स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा हैं।*

अतः उपरोक्त समस्या पर गहराई से चिन्तन, मनन एंव अध्ययन करने के बाद अध्यापकों की अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिरूचि का अध्ययन करने की इच्छा मुझमें जागृत हुई।

परिभाषा :– ''शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से विद्यमान हैं।''

–स्वामी विवेकानन्द

----------X----------

शोध साहित्य :–

वर्तमान समय में शिक्षा का लोकव्यापीकरण शोधकर्ताओं, शिक्षा राजनीतिज्ञों एवं समुदाय के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके लिए संचालित विभिन्न योजनाओं को इन्होने अपने अध्ययन एवं विचार का केन्द्र बनाया है, अभी तक शोधकर्ताओं ने आपरेशन ब्लेक बोर्ड, वैकल्पिक शाला आंगनवाड़ी, शिक्षक समस्या, औपचारिक शिक्षा, प्रौढ शिक्षा, बालिका शिक्षा, फलियान स्कूल, शिक्षा गारंटी का कियान्वयन जैसे महत्वपूर्ण विषयों के विभिन्न पहलुओं पर शोधकार्य किए है। पूर्व में श्रीमति अनिता चिंचोलीकर मेडम एवं श्री राजेश शर्मा सर ने शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

अध्ययन में कुछ शासकीय व अशासकीय विद्यालयों को चुना गया और चयनित विद्यालयों के शिक्षकों के परीक्षण प्रपत्र द्वारा टेस्ट लेकर आकड़े एकत्र किये गये। एकत्र आंकड़ों का संकलन कर प्रस्तुतीकरण वर्गीकरण एंव सारणीयन किया गया एंव शिक्षकों की अभिवृत्ति और अभिरूचि में सहसंबंध तथा सार्थक अंतर की गणना की गई।

इनके निष्कर्ष रहे कि शासकीय विद्यालयों तथा अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और अभिरूचि में सार्थक अन्तर नही हैं।

अध्ययन की प्रविधि एवं योजना :–

1. **न्यादर्शः–** जब वृहद संख्या में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ इकाईयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की प्रक्रिया को न्यादर्शन कहते है, तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है। यहॉ विभिन्न विद्यालयों से शिक्षकों का चयन कर न्यादर्श लिए गए।

2. **उपकरणः–** प्रस्तुत शोध में दो उपकरणों का उपयोग किया गया।

   1. शिक्षण अभिवृत्ति प्रपत्र द्वारा डॉ. एस. पी. अहलुबालिया जिसकी विश्वसनीयता 0.79 हैं।

   2. शैक्षिक अभिरूचि टेस्ट बेटरी द्वारा डॉ. आर. पी. सिंह तथा डॉ. एस. एन. शर्मा दोनों परीक्षण प्रमापीकृत हैं।

3. **सांख्यिकी :–** प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की ''अभिवृत्ति और अभिरूचि'' में सहसम्बन्ध तथा ''अभिरूचि –अभिरूचि'' तथा ''अभिवृत्ति–अभिवृत्ति'' में सार्थक अन्तर की गणना की गई हैं।

www.ignited.in

"व्यवसायिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों की तुलनात्मक सारणी"

समूह	मध्यममान	प्रमाणिक विचलन	सार्थक अन्तर
गुरूजी	252	26.76	0.12
सहायक अध्यापक	251	26.49	

परिणाम :– गुरूजी एवं सहायक अध्यापकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

" व्यवसायिक अभिरूचि प्राप्तांको की तुलनात्मक सारणी "

समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	सार्थक अन्तर
गुरूजी	76.75	9.65	0.081
स्हायक अध्यापक	76.50	9.95	

परिणाम :– गुरूजी एवं सहायक अध्यापकों की व्यवसाय के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में यह जाना गया हैं, कि गुरूजी एवं सहायक अध्यापकों की अपने व्यवसाय के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति एंव अभिरूचि में सार्थक अन्तर नही हैं।

शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण शिक्षा के माध्यम से दिए जाते रहना ही इस शोध की शैक्षिक उपादेयता हैं, क्योंकि उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए शिक्षा ही एक ताकतवर साधन हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दवे रमेश : (2007) बेहतर शिक्षक शिक्षा, मधुर बुक्स, इ 11/5 कृष्ण नगर दिल्ली – 110051 ।
2. डॉ. वर्मा प्रीति एवं डॉ. श्रीवास्तव डी. एन. : मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी।
3. मंगल, एस. के. (2012) : शिक्षा मनोविज्ञान पी.एच.आई. लर्निंग प्रायवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
4. पाण्डेय, आर. एस. (2010) : एम. एड. (दूरस्थ शिक्षा) लघुशोध पुस्तिका म.प्र. भोज मुक्त वि.वि., भोपाल।
5. पाण्डेय, रामशुक्ल : (2009) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, डॉ. संगेय राघव मार्ग आगरा–2 ।
6. राय पारसनाथ : अनुसन्धान परिचय।
7. सुलेमान, मोहम्मद (2007) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
8. शर्मा, आर. ए. (2010) : अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी आर. लाल बुक डिपो मेरठ।
9. श्रीवास्तव, रामजी एवं अन्य (2007) : मनोवैज्ञानिक प्रयोग एवं परीक्षण मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
10. सरीन एवं सरीन, श्रीमती शशिकला एवं अंजनी (2009) शैक्षिक अनुसंधान विधियां, अग्रवाल प्रकाशन आगरा–2 ।